Dr. Sangita Kumari Saha
B.A. D-II (S)

Psycho-analytic Therapy

मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा के जन्मदाता Dr. Sigmund Freud हैं। चिकित्सा की इस विधि का मूल उद्देश्य रोगी के अचेतन मन में repressed memory experience, motivation psycho-sexual desires of the childhood एवं Mental conflicts को कुरेद कर conscious level पर लाना होता है। इस विधि की मान्यता यह है कि रोगी की प्रारम्भिक बाल्यावस्था के समय की दमित इच्छाओं या प्रवृत्तियों की चेतन अभिव्यक्ति के फलस्वरूप रोगी में रोगसूचक का विकास होता है। यही सूझ उसकी दमित इच्छा की गुत्थियों या उलझनों को सुलझाने में सहायक होती है। इन उलझनों के सुलझाने पर रोगी रोगमुक्त हो जाता है। इस विधि का नाम मनोविश्लेषण विधि है जिसका अर्थ मानसिक विचारों या विषय सामग्री का विश्लेषण करना होता है। मनोविश्लेषण की प्रक्रिया नियमित रूप से लम्बी अवधि तक चलाई जाती है। रोगी को सुखद एवं आरामदेह स्थिति में स्वतंत्रता पूर्वक अपने मानसिक विचारों एवं प्रवाहों आदि को निःसंकोच प्रकट करने को कहा जाता है। इस क्रम में रोगी अनेक प्रकार के मानसिक विचार, इच्छाशक्ति, प्रवाह इत्यादि प्रकट करता है। इस प्रकार रोगी स्वतंत्रता पूर्वक अपने विगत जीवन के विभिन्न अनुभवों की दुनिया में विचरण करता है। इसे स्वतंत्र साहचर्य कहते हैं। अर्थात् रोगी अपने जीवन के गत अनुभवों के साथ मानसिक रूप से स्वतंत्रतापूर्वक साहचर्य स्थापित करता है।

मनोविश्लेषण की सम्पूर्ण प्रक्रिया की निम्नलिखित मुख्य अवस्थाएँ होती हैं।

(i) Preliminary stage.
(ii) Stage of resistance
(iii) Analysis of dreams
(iv) Stage of Transference.
(v) Stage of termination.

(i) Preliminary Stage :- रोगी की वास्तविक चिकित्सा प्रारम्भ करने से पहले चिकित्सक दो तीन बार रोगी के साथ प्रारम्भिक वार्तालाप द्वारा यह सुनिश्चित कर लेता है कि इस विधि द्वारा

रोगी की चिकित्सा कहाँ तक संभव हो सकेगी। इसके लिए रोगी को साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। और उसके disordered Symptoms का विवरण तैयार किया जाता है। साथ ही साथ चिकित्सा की अवधि एवं Expenditure का अनुमान लगाकर रोगी को इनसे अवगत करा दिया जाता है। उसे चिकित्सक को इस बात का संकेत मिलता है कि रोगी चिकित्सा के खर्च का वहन करने तथा चिकित्सा के लिए इच्छुक है या नहीं। इस प्रारम्भिक वार्तालाप के बाद जिन रोगियों को उनकी विधि द्वारा चिकित्सा हेतु चुना जाता है उन्हें एक निश्चित स्थान और समय पर नियमित रूप से आने का निर्देश दिया जाता है। और तब वास्तविक चिकित्सा की प्रक्रिया प्रारम्भ की जाती है। चिकित्सा की इस प्रविधि को Free association technique कहते हैं। इस प्रक्रिया में रोगी के अचेतन स्तर से विचार या अनुभव की गहराई में वह उन विचारों या इच्छाओं से अवगत होता है जो उसके व्यक्तित्व की समस्याओं से सम्बन्धित होते हैं। यह मनोविश्लेषण की पहली अवस्था है।

(2) Stage of resistance.→ स्वतंत्र साहचर्य की प्रक्रिया में एक ऐसी अवस्था आती है जब रोगी अपने मन के अवांछनीय विचारों या अनुभवों को व्यक्त नहीं करना चाहता है या जानबूझ कर कुछ बनावटी बातें करने लगता है। इसी अवस्था को प्रतिरोध की अवस्था कहते हैं। मनोविश्लेषक के समक्ष उस स्थिति में गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाती है। जिसका समाधान करने में उसे बड़ी परेशानी उठानी पड़ सकती है। वह रोगी को तरह-तरह से प्रोत्साहित करता है तथा उसे घनिष्ठ संवेगात्मक संबंध की स्थापना द्वारा रोगी को विश्वास पात्र बनना पड़ता है।

Scanned with CamScanner